BSEH Marking Scheme (March 2024)

Code : B

खंड - क (वस्तुनिष्ठ प्रश्न) **1×21=21**

Section-A (Objective Questions)

प्रश्न 1.(ब) मोहनजोदड़ो

प्रश्न 2.(अ) महर्षि वेदव्यास

प्रश्न 3.(स) मोरक्को

प्रश्न 4.(अ) आईने अकबरी

प्रश्न 5. (ब) अमला

प्रश्न 6.(अ) 26 जनवरी 1950

प्रश्न 7.(स) 15 जनवरी 1784

प्रश्न 8. (स) बोधगया

प्रश्न 9. मुद्राशास्त्र

प्रश्न 10. महावीर स्वामी

प्रश्न 11. 1813ई0

प्रश्न 12. रानी लक्ष्मीबाई

प्रश्न 13. पंडित जवाहरलाल नेहरू

प्रश्न 14. मोर

प्रश्न 15. कर्नाटक

प्रश्न 16. त्रिपिटक

प्रश्न 17. अरबी

प्रश्न 18. 9 जनवरी 1915

प्रश्न 19. (अ)

प्रश्न 20. (ब)

प्रश्न 21. (स)

Question 1. (b) Mohenjodaro

Question 2. (a) Maharishi Vedavyasa

Question 3. (c) Morocco,

Question 4. (a) Ain-e-Akbari

Question 5. (b) Amala

Question 6. (a) 26 January 1950

Question 7. (c) 15 January 1784

Question 8. (c) Bodh Gaya

Question 9. Numismatics

Question 10. Mahavir Swami

Question 11. 1813 AD

Question 12. Rani Laxmibai

Question 13. Pandit Jawaharlal Nehru

Question 14. Peacock

Question 15. Karnataka

Question 16. Tripitaka

Question 17. Arabic

Question 18 9 January 1915

Question 19. (a)

Question 20. (b)

Question 21. (c)

खंड-ख(लघु उत्तरीय प्रश्न) **3×6=18**

Short Answer Type Question

प्रश्न 22. हड़प्पा सभ्यता अथवा सिन्धु घाटी की सभ्यता भारत की महत्वपूर्ण प्राचीन सभ्यता थी। परन्तु समय के साथ-साथ यह सभ्यता पतन की तरफ अग्रसर हो गई। इसके पतन के विषय पर विद्वान एकमत नहीं है। संक्षेप में इस सभ्यता के पतन के निम्न कारण माने जाते हैं-

(i) बाढ़ –सिन्धु घाटी सभ्यता के पतन का प्रमुख कारण बाढ़ को माना जाता है। मार्शल ने मोहनजोदड़ो, मैके ने चन्हूदड़ो तथा एस. आर. राव ने लोथल के पतन का प्रमुख कारण बाढ़ माना है। परन्तु इससे उन नगरों के पतन के कारणों पर प्रकाश नहीं पड़ता जो नदियों के किनारे स्थित नहीं थे।

(ii) महामारी-अमेरिकी इतिहासकार के.यू.आर. केनेडी का विचार है कि मलेरिया जैसी किसी महामारी से हड़प्पा सभ्यता का पतन हो गया था।

(iii) जलवायु परिवर्तन-आरेल स्टाइन और अमलानन्द घोष आदि विद्वानों के अनुसार जंगलों की अति कटाई के कारण जलवायु में परिवर्तन आया। राजस्थान के क्षेत्र में जहाँ पहले बहुत वर्षा होती थी. वहाँ वर्षा कम होनेलगी। अतः सभ्यता धीरे-धीरे नष्ट हो गई।

Harappan Civilization or Indus Valley Civilization was an important ancient civilization of India. But with time this civilization moved towards decline. Scholars are not unanimous about its decline. In short, the following reasons are considered for the decline of this civilization-

(i) Flood is considered to be the main reason for the decline of the later Indus Valley Civilization. Marshall built Mohenjodaro, Mackay built Chanhudaro and S. R. Rao has considered flood as the main reason for the decline of Lothal. But this does not throw light on the reasons for the decline of those cities which were not situated on the banks of rivers.

(ii) Epidemic-American historian K.U. R. Kennedy's idea is that the Harappan civilization collapsed due to an epidemic like malaria.

(iii) Climate change: According to scholars like Arrel Stein and Amlanand Ghosh etc., climate change occurred due to excessive deforestation. In the area of Rajasthan where earlier there used to be a lot of rainfall. The rain started decreasing there. Hence the civilization gradually got destroyed.

अथवा/or

जनरल कनिंघम ब्रिटिश भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी की सेना में इंजीनियरिंग सेवा के अधिकारी थे। जो सेना से सेवानिवृत्ति के उपरांत भारत के पहले सर्वेयर जनरल के रूप में सन् 1871 में नियुक्त हुए थे और उस पद पर सन् 1885 तक कार्यरत रहे।

General Cunningham was an engineering service officer in the army of the East India Company in British India, who after retirement from the army was appointed as the first Surveyor General of India in 1871 and remained in that post till 1885.

प्रश्न 23. इब्नबतूता एक विश्व यात्री था जिसका जन्म मोरक्को के तैंजियार में हुआ था। उसे यात्रा करने का बहुत शौक था। भारत आने से पहले वह मक्का, सीरिया, इराक, फारस, यमन, ओमान की भी यात्रा कर चुका था।

मध्य एशिया के रास्ते होकर इब्न बतूता 1333 में सिंध पहुंचा। उस समय दिल्ली का सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलक था । तुगलक की ख्याति से आकर्षित होकर इब्न बतूता दिल्ली पहुंच गया। सुल्तान भी उसकी विद्वता से प्रभावित हुआ और उसे दिल्ली का काजी या न्यायाधीश बना देता है।1342 में सुल्तान

ने इब्न बतूता को अपना दूत बनाकर मंगोल शासक के पास भी भेजा था। चीन जाने से पहले इब्न बतूता ने मध्य भारत, ने बंगाल, असम, श्रीलंका, सुमात्रा होते हुए चीन पहुंचा। अपनी रोचक यात्राओं का वर्णन उसने अपनी किताब रिहला में किया है।

Ibn Battuta was a world traveler who was born in Tanziyar, Morocco. He was very fond of travelling. Before coming to India, he had also traveled to Mecca, Syria, Iraq, Persia, Yemen and Oman.

Ibn Battuta reached Sindh in 1333 via Central Asia. At that time the Sultan of Delhi was Muhammad bin Tughlaq. Attracted by the fame of Tughlaq, Ibn Battuta reached Delhi. The Sultan was also impressed by his scholarship and made him the Qazi or judge of Delhi. In 1342, the Sultan also sent Ibn Battuta as his messenger to the Mongol ruler. Before going to China, Ibn Battuta visited Central India. Reached China via Bengal, Assam, Sri Lanka, Sumatra. He described his interesting travels in his book Done in "Rihala".

प्रश्न 24. अल-बिरुनी उज्बेकिस्तान के ख्वारिज्म शहर का निवासी था। उसका जन्म 973 ई० में हुआ था। वह महमूद गजनवी के साथ भारत आया था। उसकी पुस्तक का नाम किताब-उल-हिंद है जिसे अरबी भाषा में लिखा गया है।

Al-Biruni was a resident of Khwarizm city of Uzbekistan. He was born in 973 AD. He came to India with Mahmud Ghaznavi. The name of his book is Kitab-ul-Hind which is written in Arabic language.

प्रश्न 25. भक्ति परंपरा की एक और विशेषता इसकी विविधता है। दूसरे स्तर पर, धर्म के इतिहासकार भक्ति परंपरा को दो मुख्य वर्गों में बाँटते हैं : सगुण (विशेषण सहित) और निर्गुण (विशेषण विहीन)

Another characteristic of the Bhakti tradition is its diversity. At the second level, historians of religion divide the Bhakti tradition into two main categories: Saguna (with adjectives) and Nirguna (without adjectives).

प्रश्न 26. इस्लाम धर्म स्वीकार करने वालों को निम्नलिखित पांच बातें माननी पड़ती थी-

(i) अल्लाह एक मात्र ईश्वरहै।

(ii) पैगम्बर मोहम्मद अल्लाह के दूत है।

(iii) प्रत्येक मुसलमान को दिन में पाँच बार नमाज़ पढ़नी चाहिए।

(iv) खैरात बांटनी चाहिए।

(v) जीवन में कम से कम एक बार हज की यात्रा करना तथा रमजान के महीने में रोजे रखना।

Question 26. Those who accepted Islam had to accept the following five things:

(i) Allah is the only God.

(ii) Prophet Mohammad is the messenger of Allah.

(iii) Every Muslim should offer Namaz five times a day.

(iv) Charity should be distributed.

(v) Traveling to Haj at least once in a lifetime and fasting in the month of Ramadan.

प्रश्न 27. पम्पादेवी विजयनगर साम्राज्य की देवी हैं। हम्पी विजयनगर साम्राज्य की राजधानी है। हम्पी नाम का विकास पम्पा से हुआ है जो तुंगभद्रा नदी का प्राचीन नाम है। पम्पा का अर्थ ब्रह्मा की बेटी, पार्वती से भी है। ऐसा कहा जाता है कि पार्वती ने यहां पर एक शक्तिशाली ध्यान लगाया और शिव की पूजा की।

Pampadevi is the goddess of Vijayanagara Empire. Hampi is the capital of the Vijayanagara Empire. named hampi the development has taken place from Pampa which is the ancient name of Tungabhadra river. Pampa also refers to Brahma's daughter, Parvati. It is said that Pavati performed a powerful meditation here and worshiped Shiva.

अथवा/or

विजयनगर वंश की स्थापना हरिहर एवं बुक्का ने 1336 ईस्वी में की थी। हरिहर और बुक्का के पिता का नाम संगम था। उन्हीं के नाम पर इस वंश का नाम संगम वंश पड़ा। इस वंश का प्रथम शासक हरिहर प्रथम (1336 – 1356 ईस्वी) हुआ, जिसने 1336 ईस्वी में विजयनगर साम्राज्य की स्थापना की और हम्पी को अपनी राजधानी बनाया।

The Vijayanagara dynasty was founded by Harihar and Bukka in 1336 AD. Harihar and Bukka's father

The name was Sangam. This dynasty was named Sangam dynasty after his name. Harihar I, the first ruler of this dynasty(1336 -1356 AD), who established the Vijayanagara Empire in 1336 AD and annexed Hampi.

खंड- ग (स्रोत आधारित प्रश्न) 3×4=12

Source Based Question

प्रश्न 28. 1. सुदर्शन झील एक कृत्रिम जलाशय था ।

2. दूसरी शताब्दी ई. के एक अभिलेख अनुसार इस झील का निर्माण मौर्य काल में एक स्थानीय राज्यपाल द्वारा कराया गया था।

3. इस झील की मरम्मत अपने खर्चे से शक शासक रूद्रदमन द्वारा करवाई गई थी।

Question 28. 1. Sudarshan Lake was an artificial reservoir.

2. According to an inscription of the second century AD, this lake was constructed by a local governor during the Maurya period Was done.

3. This lake was repaired by the Shaka ruler Rudradaman at his own expense.

प्रश्न 29.1. विजयनगर का प्रसिद्ध शासक कृष्णदेव राय था। उसने 1509 ई. से 1529 ई. तक शासन किया था।

2. 'अमुक्तमल्यद' नामक पुस्तक के लेखक कृष्णदेव राय थे। इसकी भाषा तेलुगु थी।

3. कृष्णदेव राय ने अपनी पुस्तक में लिखा कि एक राजा को अपनी बंदरगाहों को सुधारना चाहिए तथा वाणिज्य को प्रोत्साहित करना चाहिए। उसे विदेशी नाविकों की देखभाल का उचित प्रबंध करना चाहिए। उसे सुदुर देशों के व्यापारियों को उपहार देकर अपने साथ संबद्ध करना चाहिए।

Question 29.1. The famous ruler of Vijayanagara was Krishnadeva Raya. He ruled from 1509 AD to 1529 AD.

2. The author of the book named 'Amuktmanyad' was Krishnadev Rai, its language was Telugu.

3. Krishnadev Rai wrote in his book that a king should improve his ports and encourage commerce. He should make proper arrangements for the care of foreign sailors. He should ally himself with the merchants of distant countries by giving them gifts.

प्रश्न 30. 1. महात्मा गाँधी मशीनों के घोर आलोचक थे क्योंकि मशीनों ने मनुष्य को अपना गुलाम बना लिया है तथा श्रम के महत्त्व को समाप्त किया है।

2. महात्मा गांधी ने मशीनों के स्थान पर चरखे को महत्त्वपूर्ण माना क्योंकि चरखा मानव समाज का प्रतीक है तथा मशीनों के ऊपर निर्भरता को कम करता है। चरखा गरीबों को पूरक आमदनी प्रदान कर सकता था तथा उन्हें स्वावलम्बी बना सकता था।

3. मशीन के प्रति सनक से गाँधी को आपत्ति थी क्योंकि इससे बेरोजगारी बढ़ती है तथा श्रम का महत्व कम होता है। मशीन धन का केंद्रीकरण करके समाज में आर्थिक असमानता पैदा करती है।

Question 30. 1. Mahatma Gandhi was a strong critic of machines because machines have taken over and eliminated the importance of labour make man your slave

2. Mahatma Gandhi considered the charkha more important than machines because the charkha is a symbol of human society and reduces the dependence on machines. Charkha could provide supplementary income to the poor and make them self-reliant.

3. Gandhi had objection to the obsession with machines because it increases unemployment and reduces the importance of labour. The machine creates economic inequality in society by centralizing wealth.

खंड-घ(निबंधात्मकप्रश्न) 3×8=24

Essay Type Question

प्रश्न 31. हड़प्पा सभ्यता में शासक के अस्तित्व को लेकर विद्वान एकमत नहीं है। कुछ पुरातत्वविद इस मत के हैं कि इस सभ्यता में शासक नहीं थे। परन्तु प्राप्त हुए विभिन्न प्रमाणों के आधार पर तथा सभ्यता के विभिन्न क्षेत्रों में कुछ विषयों को लेकर जो समरूपता पाई गई है, उसके आधार पर कहा जा सकता है कि शासकों की इस सभ्यता में महत्त्वपूर्ण भूमिका रही होगी। हड़प्पाई समाज में शासकों द्वारा निम्न संभावित कार्य सम्पन्न किए जाते होंगे

(अ) पुरावस्तुओं में एकरूपता स्थापित करना- हड़प्पा सभ्यता में पुरावस्तुओं मुहरों, बाटों तथा ईंटों में पाई जाने वाली असाधारण एकरूपता से स्पष्ट होता है कि पूरी सभ्यता में इस एकरूपता की स्थापना करना जनसामान्य के बस की बात नहीं थी। इन जटिल कार्यों को शासक के द्वारा कानून के माध्यम से सम्पन्न किया जाता होगा।

(ब) नगरयोजना बनाना-शासकों का द्वितीय अति महत्वपूर्ण कार्य नगरयोजना बनाना रहा होगा। हड़प्पा सभ्यता में नगर एक सुनिश्चित योजना के द्वारा बनाए जाते थे। नगरों में जल निकासी की उत्तम व्यवस्था की जाती थी। सड़को को ग्रिड पद्धति पर बनाया जाता था। आपदा के समय के लिए अन्न

को सुरक्षित रखने हेतू अन्नागार जैसी संरचना को स्थापित करना। ये सभी कार्य एक शासक के द्वारा ही नियमित रूप से सम्पन्न किए जाते होंगे।

(स) शिल्प-उत्पादन के लिए कच्चे माल का प्रबन्धन हड़प्पा सभ्यता में अनेक शिल्प-उत्पादन कार्यों का संपादन होता था। इन शिल्प उत्पादन कार्यों के लिए आवश्यक कच्चे माल को उपलब्ध करवाना शासन तंत्र की ही जिम्मेवारी रही होगी।

(द) कच्चे माल की प्राप्ति के लिए बस्तियाँ स्थापित करना- अर्थव्यवस्था को सुचारु रूप से गति प्रदान करने के लिए शासकों के द्वारा शिल्प उत्पादन के लिए कच्चे माल की प्राप्ति के लिए सभ्यता के अनेक स्थानों पर वस्तियाँ स्थापित की गई होगी। उदाहरण के लिए नागेश्वर और बालाकोट में जहाँ शंख आसानी से उपलब्ध था, बस्तियां स्थापित की।

(ध) अभियान भेजना एवं सुदुर क्षेत्रों में सम्बन्ध स्थापित करना – शासकों के द्वारा व्यापारिक गतिविधियों को व्यवस्थित करने हेतु समय-समय पर विभिन्न स्थानों पर अभियान भेजे जाते थे। जैसे राजस्थान के खेतड़ी अंचल से ताँबा प्राप्त करने के लिए अभियान भेजना। विभिन्न प्रमाणों से पता चलता है कि हड़प्पा सभ्यता का ओमान, मेलुहा आदि बाहरी क्षेत्रों से सम्बन्ध रहा था। इन सभी कार्यों को शासकों के द्वारा ही किया जा सकता था।

इस प्रकार स्पष्ट है कि उपर्युक्त कार्यों की नियमित रूप तथा प्रभावी ढंग से सम्पन्न केवल शासक वर्ग ही कर सकते थे। ये सभी निर्णय आम लोग सामूहिक रूप से नहीं ले सकते थे।

Question 31. Scholars are not unanimous about the existence of a ruler in the Harappan civilization. Some archaeologists are of the opinion that there were no rulers in this civilization. But on the basis of various evidences received and on the basis of similarity found regarding some subjects in different areas of civilization, it can be said that rulers must have played an important role in

this civilization. The following possible tasks would have been performed by the rulers in the Harappan society:

(a) Establishing uniformity in the antiquities: The extraordinary uniformity found in the antiquities, seals, weights and bricks of the Harappan civilization makes it clear that establishing this uniformity in the entire civilization was not within the reach of the common man. These complex tasks would have been accomplished by the ruler through law.

(b) Making city planning: The second most important task of the rulers must have been making city planning. In the Harappan civilization, cities were built according to a definite plan. drainage in cities.

Excellent arrangements were made. Roads were built on the grid system. Establishing a structure like a granary to preserve food grains in times of disaster. All these tasks would have been performed regularly by a ruler only.

(c) Management of raw materials for craft production: Many craft production tasks were carried out in the Harappan civilization. It must have been the responsibility of the government system to provide the necessary raw materials for these craft production works.

(d) Establishing settlements to obtain raw materials - In order to provide a smooth pace to the economy, the rulers must have established settlements at many places in the civilization to obtain raw materials for craft production. For example, settlements were established in Nageshwar and Balakot where conch shells were easily available.

(d) Sending expeditions and establishing relations in remote areas: From time to time, expeditions were sent to various places by the rulers to organize trade activities. Like sending an expedition to get copper from Khetri region of Rajasthan. Various evidences show that the Harappan civilization had relations with outer areas like Oman, Meluha etc. All these works could be done only by the rulers.

Thus, it is clear that only the ruling class could accomplish the above mentioned tasks regularly and effectively. Common people could not take all these decisions collectively.

अथवा/or

हड़प्पा सभ्यता अथवा सिन्धु घाटी की सभ्यता भारत की महत्वपूर्ण प्राचीन सभ्यता थी। परन्तु समय के साथ-साथयह सभ्यता पतन की तरफ अग्रसर हो गई। इसके पतन के विषय पर विद्वान एकमत नहीं है। संक्षेप में इस सभ्यता के पतन के निम्न कारण माने जाते हैं-

(i) बाढ़-सिन्धु घाटी सभ्यता के पतन का प्रमुख कारण बाढ़ को माना जाता है। मार्शल ने मोहनजोदड़ो, मैके ने चन्हूदड़ो तथा एस.आर. राव ने लोथल के पतन का प्रमुख कारण बाढ़ माना है। परन्तु इससे उन नगरों के पतन के कारणों पर प्रकाश नहीं पड़ता जो नदियों के किनारे स्थित नहीं थे।

(ii) महामारी– अमेरिकी इतिहासकार के. यू. आर. केनेडी का विचार है कि मलेरिया जैसी किसी महामारी से हड़प्पा सभ्यता का पतन हो गया था।

(iii) जलवायु परिवर्तन-आरेल स्टाइन और अमलानन्द घोष आदि विद्वानों के अनुसार जंगलों की अति कटाई के कारण जलवायु में परिवर्तन आया। राजस्थान के क्षेत्र में जहाँ पहले बहुत वर्षा होती थी, वहाँ वर्षा कम होने लगी। अतः सभ्यता धीरे-धीरे नष्ट हो गई।

(iv) आर्य आक्रमण-व्हीलर गार्डन चाइल्ड आदि विद्वानों ने हड़प्पा सभ्यता के पतन का कारण आर्यों का आक्रमण माना है। अपने मत की पुष्टि में उन्होंने मोहनजोदड़ों से प्राप्त नरकंकालों का मिलना बताया है परन्तु बाद के अनुसंधानों ने यह सिद्ध कर दिया कि व्हीलर की यह धारणा कि आर्य लोग इस सभ्यता के पतन का कारण थे, मात्र एक मिथक थी।

(v) प्रशासनिक शिथिलता-कुछ विद्वानों के अनुसार हड़प्पा सभ्यता के अन्तिम चरण में प्रशासनिक शिथिलता के लक्षण नजर आने लगे थे। अब मकानों में कच्ची ईंटों का प्रयोग अधिक होने लगा था। सभ्यता अब ग्रामीण स्वरूप अपनाने लगी थी। अतः इस सभ्यता का धीरे-धीरे पतन हो गया।

(vi) भूकम्प-कुछ विद्वान इस सभ्यता के पतन का कारण भूकम्प को मानते है। गुजरात में हाल ही में आए भूकम्पों ने इस सभ्यता के पतन के प्रमुख कारण पर दोबारा विचार करने पर मजबूर कर दिया है।

अतः उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि विद्वान हड़प्पा सभ्यता के पतन के कारणों पर भिन्न-भिन्न विचारधारा रख हैं। परंतु फिर भी बाढ़ को इस सभ्यता के पतन का सर्वाधिक मान्य कारण माना जाता है।

Harappan Civilization or Indus Valley Civilization was an important ancient civilization of India. But with time this civilization moved towards decline. Scholars are not unanimous about its decline. In short, the following reasons are considered for the decline of this civilization-

(1) Flood- Flood is considered to be the main reason for the decline of the Indus Valley Civilization. Marshall took Mohenjodaro, Mackay took Chanhudo and S. R. Rao has considered the flood to be the main reason for the fall of Lothal. But this does not throw light on the reasons for the decline of those cities which were not situated on the banks of rivers.

(ii)The epidemic - The epidemic was described by American historian K.U.R. Kennedy's view is that the Harappan civilization collapsed due to an epidemic such as malaria.

(iii) Climate change- According to scholars like Arrel Stein and Amalanand Ghosh etc., climate change occurred due to excessive deforestation. In the area of Rajasthan where earlier there was a lot of rainfall, the rainfall started decreasing. Hence the civilization gradually got destroyed.

(iv)Aryan invasion-Scholars like Wheeler Garden Child etc. have caused the decline of Harappan civilization. It is considered an attack by Aryans. In confirmation of his opinion he cited the evidence of males obtained from Mohenjodaro.The discovery of skeletons has been reported, but later research proved that Wheeler's belief that the Aryan people were the cause of the decline of this civilization was just a myth.

(v) Administrative laxity- According to some scholars, signs of administrative laxity started appearing in the last phase of Harappan civilization. Now raw

bricks were being used more in houses. Civilization had now started adopting a rural form, hence this civilization It gradually declined.

(vi) Earthquake: Some scholars consider earthquake to be the reason for the decline of this civilization. The recent earthquakes in Gujarat have forced us to reconsider the main reason for the decline of this civilization.

Therefore, it is clear from the above description that scholars have different views on the reasons for the decline of the Harappan civilization. But still Baath is considered to be the most accepted reason for the decline of this civilization.

प्रश्न 32. भक्ति परम्परा में संत कबीर एक महत्वपूर्ण स्थान रखते है। कबीर की जीवनी, उनके प्रमुख उपदेश या शिक्षाएँ एक भक्ति परम्परा में उनके महत्व का संक्षेप में वर्णन इस प्रकार है-

(i) जीवनी – कबीर 14वीं – 15वीं शताब्दी में उभरने वाले संत कवियों में अप्रतिम थे। इतिहासकारों ने उनके जीवन और काल का अध्ययन उनके काव्य और बाद में लिखी गई जीवनियों के आधार पर किया है। इस विषय पर आज भी विवाद है कि वह जन्म से हिंदू थे अथवा मुसलमान और यह विवाद अनेक संत जीवनियों में उभर कर आते है जो 17वीं शताब्दी यानी उनकी मृत्यु के 200 वर्ष बाद से लिखी गई। वैष्णव परंपरा की जीवनियों में कबीर को जन्म से हिंदू कबीरदास बताया गया है। किंतु उनका पालन गरीब मुसलमान परिवार में हुआ जो जुलाहे थे और कुछ समय पहले ही इस्लाम धर्म के अनुयायी बने थे। कबीर के गुरु रामानंद थे।

(ii) कबीर साहित्य—कबीर की वाणी कबीर बीजक एवं कबीर ग्रंथावली में संरक्षित है। इसके अतिरिक्त कबीर के कई पद आदि ग्रन्थ साहिब में भी संकलित है।

(iii) कबीर के उपदेश या शिक्षाएँ-

(1)कबीर ने निर्गुण भक्ति पर बल दिया जिसके अनुसार ईश्वर का कोई आकार नहीं है। वह सर्वव्यापक एवं सर्वशक्तिमान है।

(2) ईश्वर एक है तथा उसे किसी भी नाम से पुकारा जा सकता है।

(3) वे मूर्ति पूजा का विरोध करते थे। वे अन्धविश्वासों का खंडन करते थे।

(4) कबीर गुरू की आवश्यकता पर बल देते थे। वे गुरु को ईश्वर प्राप्ति का साधन मानते थे।

(5) वे जाति-पाति के भेदभावों को नहीं मानते थे। उन्होंने सामाजिक एकता पर बल दिया।

(6) कबीर हिन्दू-मुस्लिम एकता में विश्वास करते थे।

(7) कबीर कर्म सिद्धान्त में विश्वास करते थे। उनके अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को कर्मों के अनुसार फल मिलता है।

(iv) उपदेशों का संप्रेषण अथवा कबीर की भाषा- कबीर ने अपने विचारों के संप्रेषण के लिए किसी एक भाषा का प्रयोग नहीं किया। उनके विचार हिंदी, पंजाबी, फारसी व अवधी भाषाओं में मिलते है। वे किसी भाषा को विशेष रूप से पवित्र नहीं मानते थे। उनकी रचनाओं की भाषा को संत भाषा कहा जाता है। उनकी कुछ रचनाएँ 'उलटबाँसी' के नाम से प्रसिद्ध हैं।

(vi) भक्ति परंपरा में महत्त्व- भक्ति परंपरा में कबीर एक अनूठा स्थान रखते है। उन्होंने निर्गुण भक्ति परंपरा का प्रचार किया। उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से हिन्दू एवं मुस्लिम धर्म की कुरीतियों पर जोरदार प्रहार किया तथा सामाजिक एकता एवं समानता पर बल दिया। वे कर्म सिद्धान्त में विश्वास करते थे।

उन्होंने परम सत्य को वर्णित करने के लिए अनेक परिपाटियों का सहारा लिया। इस्लामी दर्शन की तरह वे सत्य को अल्लाह, खुदा एवं पीर कहते है। वेदान्त दर्शन से प्रभावित, वे सत्य को अदृष्य, निराकार ब्रह्मान् और आत्मन् कह कर भी सम्बोधित करते हैं। कबीर की कुछ कविताएँ इस्लामी दर्शन के

एकेश्वरवाद और मूर्तिभंजन का समर्थन करते हुए हिंदू धर्म के बहुदेववाद और मूर्तिपूजा का खंडन करती है। यह नाम सिमरन पर भी बल देते हैं।

कबीर की भक्ति परंपरा इस बात का प्रतीक है कि कबीर पहले और आज भी उन लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत है जो सत्य की खोज में रूढ़िवादी, धार्मिक, सामाजिक संस्थाओं, विचारों और व्यवहारों की प्रश्नवाचक दृष्टि से देखते हैं।

Question 32. Saint Kabir holds an important place in the Bhakti tradition. Kabir's biography, his major teachings or teachings and their importance in a Bhakti tradition are briefly described as follows -

(i) Biography Kabir 14b was unique among the saint poets who emerged in the 15th century. Historians have studied his life and times on the basis of his poetry and the biographies written later. There is still a dispute on whether he was a Hindu or a Muslim by birth and this dispute emerges in many saint biographies which were written in the 17th century, i.e. 200 years after his death. In the biographies of Vaishnav tradition, Kabir has been described as Kabirdas, a Hindu by birth. But he was brought up in a poor Muslim family who were weavers and had become followers of Islam some time ago. Kabir's guru was Ramanand.

(ii) Kabir Literature – Kabir's speech is preserved in Kabir Bijak and Kabir Granthawali. Apart from this Kabir

Many verses are also compiled in Adi Granth Sahib.

(iii) Kabir's sermons or teachings-

(1) Kabir emphasized on Nirguna Bhakti according to which God has no shape. he is omnipresent

And is omnipotent.

(2) God is one and He can be called by any name.

(3) He opposed idol worship. He used to refute superstitions.

(4) Kabir used to emphasize on the need of Guru. He considered Guru as a means to attain God.

(5) He did not believe in caste based discrimination. He emphasized on social unity.

(6) Kabir believed in Hindu-Muslim unity.

(7) Kabir believed in the principle of karma. According to him, every person gets results according to his deeds.

(iv) Communication of sermons or Kabir's language - Kabir did not use any one language to communicate his thoughts. His thoughts are found in Hindi, Punjabi, Persian and Awadhi languages. They did not consider any language particularly sacred. The language of his works is called saint language goes. Some of his works are famous by the name of 'Ulatbansi'.

(vi) Importance in Bhakti tradition- Kabir holds a unique place in the Bhakti tradition. He propagated the Nirguna Bhakti tradition. Through his writings, he strongly attacked the evils of Hindu and Muslim religions and emphasized on social unity and equality. He believed in the principle of karma.

He resorted to many conventions to describe the ultimate truth. Like Islamic philosophy, they call truth as Allah, God and Pir. Influenced by Vedanta philosophy, he considered truth invisible,

They are also addressed as formless Brahman and Atman. Some of Kabir's poems reject the polytheism and idolatry of Hinduism while supporting the monotheism and iconoclasm of Islamic philosophy. This name also emphasizes on Simran.

Kabir's Bhakti tradition symbolizes that Kabir was, and still is, a source of inspiration for those who look questioningly at orthodox religious, social institutions, thoughts and practices in search of truth.

अथवा/or

मध्यकालीन भारत में सल्तनत काल में अनेक हिंदू संतो और सुधारकों ने समाज में फैली बुराइयों को दूर करने के लिए एवं हिन्दू-मुस्लिम द्वेष को कम करने के लिए जो आंदोलन चला उसे भक्ति आंदोलन कहा जाता है। इसआंदोलन में संतों ने अपने-अपने तरीकों से अपने आराध्य की स्तुति की है। कुछ भक्ति

संत अपने आराध्य का भजन करते हुए घूमते थे तथा मंदिरों में उनकी पूजा करते थे। भक्ति आंदोलन की प्रमुख शिक्षाएँ इस प्रकार है:

(i) एक ईश्वर में विश्वास- भक्ति आंदोलन के सभी संत एक ईश्वर की एकता में विश्वास करते थे। उनकामत था कि ईश्वर एक है। वह सर्वशक्तिमान और सर्वव्यापक है।

(ii) ईश्वर के प्रति अपार प्रेम- इस काल के संतों के अनुसार भक्ति के द्वारा ही मोक्ष की प्राप्ति सम्भव है और ईश्वर के प्रति अपार प्रेम द्वारा ही सच्ची भक्ति प्राप्त की जा सकती है। उदाहरण के लिए मीराबाई कीभक्ति में कृष्ण के प्रति अपार प्रेम था।

(iii) जातिवाद और वर्ग-भेद का विरोध- भक्तिकाल के सभी संतों ने जाति प्रथा तथा वर्ग-भेद का बड़े जोरदारढंग से विरोध किया। उन्होंने सामाजिक समानता पर बता दिया। उनका मानना था कि सच्चे मन से की गईभक्ति से हर मनुष्य ईश्वर को प्राप्त कर सकता है।

(iv) हिन्दू-मुस्लिम एकता पर बल- भक्तिकाल के सन्तों ने हिन्दू-मुस्लिम एकता पर बल दिया। कबीर ने हिन्दुओं और मुसलमानों में बढ़ती कटुता को समाप्त करने के लिए दोनों की आलोचना की। हिन्दू औरमुसलमान दोनों ही उनके शिष्य थे। गुरु नानक और रैदास भी हिन्दू- मुस्लिम एकता के पक्षधर थे।

(v) मूर्तिपूजा का विरोध- इस आंदोलन की एक प्रमुख विशेषता यह थी कि इसने मूर्ति पूजा में विशेष रुचिनहीं दिखाई और कुछ संतों ने इसका स्पष्ट विरोध किया, जिनमें कबीर प्रमुख है। उदाहरण के लिए कबीर ने मूर्तिपूजा का विरोध करते हुए कहा था कि "पाहन पूजे हरि मिले, मैं तो पूजू पहार याते चाकी भली जो पीस खाय संसार।।"

(vi) सामाजिक कुरीतियों का विरोध-मध्यकाल में भारत में अनेक कुरीतियाँ फैली हुई थी। धर्म के नाम पर अनेक अन्धविश्वास प्रचलित थे। भक्तिकाल के सन्तों ने सामाजिक कुरीतियों का विरोध किया और ईश्वर भक्ति पर बल दिया। गुरू नानक देव ने यज्ञ, आनुष्ठानिक स्नान, मूर्तिपूजा व कठोर तप को अस्वीकार कियातथा गुरु नानक देव जी ने ग्रहस्थ जीवन का त्याग करने का भी विरोध किया था।

(vii) गुरु की महिमा पर बल- भक्तिकाल के सभी संतो ने ईश्वर प्राप्ति के लिए गुरु की आवश्यकता पर बल दिया। गुरु अपने शिष्य के अज्ञान को मिटाकर उसे ज्ञान का मार्ग दिखाता है। गुरु की महिमा पर बल देते हुए कबीर ने कहा था- "गुरु गोविंद दोऊ खड़े काके लागू पाय बलिहारी गुरु आपने गोविंद दियो बताए"।

In medieval India, during the Sultanate period, the movement started by many Hindu saints and reformers to remove the evils spread in the society and to reduce Hindu-Muslim hatred is called Bhakti movement. In this movement, the saints have praised their deity in their own ways. Some Bhakti saints used to roam around singing praises of their deity and worshiping them in temples. The main teachings of the Bhakti movement are as follows:

(i) Belief in One God All the saints of the Bhakti movement believed in the unity of one God. He believed that God is one. He is omnipotent and omnipresent.

(ii) Immense love for God: According to the saints of this period, salvation is possible only through devotion and true devotion can be achieved only through immense love for God. For example, Meerabai had immense love for Krishna in her devotion.

(iii) Opposition to casteism and class discrimination: All the saints of the Bhakti period strongly opposed the caste system and class discrimination. He spoke on social equality. He believed that

Every human being can attain God by devotion done with true heart.

(iv) Emphasis on Hindu-Muslim unity: The saints of Bhakti period laid emphasis on Hindu-Muslim unity. Kabir criticized both to end the growing bitterness between Hindus and Muslims. Both Hindus and Muslims were his disciples. Guru Nanak and Raidas were also in favor of Hindu-Muslim unity.

(v) Opposition to idol worship A major feature of this movement was that it did not show much interest in idol worship and some saints clearly opposed it, among whom Kabir is prominent. For example, Kabir had opposed idol worship and said that "Pahan puje hari mile, me to pooju mahar" The world eats the grinding wheel."

(vi) Opposition to social evils – Many evils were spread in India during the medieval period. in the name of religion Many superstitions were prevalent. The saints of the Bhakti period opposed social evils and worshiped God. Emphasized on devotion. Guru Nanak Dev rejected yajna, ritual bath, idol worship and harsh penance. And Guru Nanak Dev Ji had also opposed renouncing earthly life.

(vii) Emphasis on the glory of Guru: All the saints of Bhakti period emphasized on the need of Guru to attain God. The Guru removes the ignorance of his disciple and shows him the path of knowledge. on the glory of the Guru to give force happened

Kabir had said- Guru Govind doou khade kake lagu pay , Balihari Guru, you told Govind Diya.

प्रश्न 33. अवध में विद्रोह अपेक्षाकृत सबसे व्यापक था। इस प्रांत में आठ डिविजन थे उन सभी में विद्रोह हुआ। यहाँ किसान और दस्तकार से लेकर ताल्लुकदार और नवाबी परिवार के सदस्यों सहित सभी लोगों ने इसमें भाग लिया। हरेक गाँव से लोग विद्रोह में शामिल हुए। यहाँ विदेशी शासन के विरुद्ध यह विद्रोह लोक-प्रतिरोध का रूप धारण कर चुका था। लोग फिरंगी राज के आने से अत्यधिक आहत थे। उन्हें लग रहा था कि उनकी दुनिया लुट गई है. वो सब कुछ बिखर गया है. जिन्हें वो प्यार करते थे। संक्षेप में, विद्रोह की व्यापकता के निम्नलिखित कारण थे—

(1) अवध का विलय – अवध का विलय 1856 में विद्रोह फूटने से लगभग एक वर्ष पहले हुआ था। इसे 'कुशासन' का आरोप लगाते हुए ब्रिटिश साम्राज्य में मिलाया गया था। लेकिन अवधवासियों ने इसे न्यायसंगत नहीं माना। बल्कि वे इसे डलहौजी का विश्वासघात मान रहे थे। 1851 में ही लार्ड डलहौजी ने अवध के बारे में कहा था कि यह गिलास फल (cherry) एक दिन हमारे ही मुंह में आकर गिरेगा।

डलहौजी एक उग्र साम्राज्यवादी था। वस्तुतः उसकी दिलचस्पी अवध की उपजाऊ जमीन को हड़पने में भी थी। अतः कुशासन तो एक बहाना था। अवधवासी जानते थे कि अपदस्थ नवाब वाजिद अली शाह बहुत लोकप्रिय था। लोगों की नवाब और उसके परिवार से गहरी सहानुभूति थी। जब उसे कलकत्ता से निष्कासित किया गया तो बहुत से लोग उनके विलाप करते हुए गए।

(ii) ताल्लुकदारों का अपमान- ताल्लुकदारों ने विद्रोह में बढ़-चढ़कर भाग लिया। उनकी सत्ता व सम्मान को अंग्रेजी राज से जबरदस्त क्षति हुई थी। ताल्लुकदार अवध क्षेत्र में वैसे ही छोटे राजा थे जैसे बंगाल में जमींदार वे छोटे महलनुमा घरों में रहते थे। अपनी-अपनी जागीर में सत्ता व जमीन पर उनका नियंत्रण था। 1856 मेंअवध का अधिग्रहण करते ही इन ताल्लुकदारों की सेनाएँ भंग कर दी गई और दुर्ग भी ध्वस्त कर दिए गए।

(iii) भूमि छीनने की नीति आर्थिक दृष्टि से अवध के ताल्लुकदारों की हैसियत व सत्ता को क्षति भूमि छीनने की नीति से पहुँची। 1856 ई. में अधिग्रहण के तुरंत बाद एक मुश्त बंदोबस्त (Summary settlement of 1856) नाम से भू-राजस्व व्यवस्था लागू की गई, जो इस मान्यता पर आधारित थी कि ताल्लुकदार जमीन के वास्तविक मालिक नहीं हैं। उन्होंने जमीन पर कब्जा धोखाधड़ी व शक्ति के बल पर किया हुआ है। इस मान्यता के आधार पर जमीनों को जाँच की गई। ताल्लुकदारों की जमीनें उनसे लेकर किसानों को दी

जाने लगी। पहले अवध के 67% गाँव ताल्लुकदारों के पास थे और इस ब्रिटिश नीति से यह संख्या घटकर मात्र 38% रह गई।

(iv) किसानों में असंतोष-विद्रोह में बहुत बड़ी संख्या में किसानों ने भाग लिया। इनसे अंग्रेज अधिकारी काफी परेशान हुए थे, क्योंकि किसानों ने अंग्रेजों का साथ देने की बजाय अपने पूर्व मालिकों का साथ दिया। जबकि अंग्रेजों ने उन्हें जमीनें भी दी थीं। इसके कई कारण थे जैसे कि अंग्रेजी राज से एक संपूर्ण ग्रामीण समाज व्यवस्था भंग हो गई थी। ताल्लुकदारों की छवि दयालु अभिभावकों की थी। तीज-त्योहारों पर भी उन्हें कर्जा अथवा मदद मिल जाती थी, फसल खराब होने पर भी उनकी दया-दृष्टि किसानों पर रहती थी। लेकिन अंग्रेजी राज की नई भू-राजस्व व्यवस्था में कोई लचीलापन नहीं था, न ही उसके निर्धारण में और ना ही वसूली में। मुसीबत के समय यह नई सरकार कृषकों से कोई सहानुभूति की भावना नहीं रखती थी।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि अवध में विद्रोह विभिन्न सामाजिक समूहों का एक सामूहिक कृत्य था।

Question 33. The rebellion was relatively most widespread in Awadh. There were eight divisions in this province, there was rebellion in all of them. Here everyone from farmers and artisans to Talukdars and members of the Nawabi family participated in it. People from every village joined the rebellion. Here this rebellion against foreign rule had taken the form of public resistance. People were extremely hurt by the arrival of Firangi Raj. They felt that their world had been looted. All that has fallen apart. Whom he loved. In short, the following were the reasons for the widespread of the rebellion-

(1) Merger of Awadh The merger of Awadh took place in 1856, about a year before the outbreak of the rebellion. It was annexed to the British Empire accusing it of 'misrule'. But the people of Abad did not consider it fair. Rather, they considered it a betrayal by Dalhousie. In 1851 itself, Lai Dalhousie had said about Awadh that one day this glass of fruit (cherry) will be in our mouth Will come and fall."

DIlhouji was an ardent imperialist. In fact, he was also interested in usurping the fertile land of Awadh. Therefore, misgovernance was an excuse. The people of Awadh knew that the deposed Nawab Wajid Ali Shah was very popular. People had deep sympathy for the Nawab and his family. When he was expelled from Calcutta, many people went to mourn him.

(ii) Insult of Talukdars Talukdars participated enthusiastically in the rebellion. His power and respect suffered tremendous damage due to the British rule. Talukdars were small kings in the Awadh region, just like the zamindars in Bengal, they lived in small palatial houses. They had power and control over the land in their respective estates. As soon as Awadh was acquired in 1856, the armies of these talukdars were disbanded and the forts were also demolished.

(ii) Policy of land snatching: From the economic point of view, the status and power of the talukdars of Awadh was harmed by the policy of land snatching. Immediately after the acquisition in 1856 AD, a land revenue system called the Summary settlement of 1856 was implemented, which was based on the belief that the Talukdars were not the real owners of the land. They captured the land through fraud and power.

Done on water. Based on this belief the lands were examined. The land of the Talukdars started being taken from them and given to the farmers. Earlier 67% of the villages of Awadh were owned by Talukdars and due to this British policy this number reduced to only 38%.

(iv) Dissatisfaction among farmers – A large number of farmers took part in the rebellion. The British officials were greatly troubled by this, because instead of supporting the British, the farmers supported their former owners. Whereas the British had also given them lands. There were many reasons for this like the entire rural social system was broken due to the British rule. Talukdars had the image of kind guardians. He used to get loans or help even during Teej-festivals and even when crops failed, he had pity on the farmers. But there was no flexibility in the new land revenue system of the British Raj, neither in its determination nor in recovery. This new government had no sympathy for the farmers during the times of trouble.

In short it can be said that the rebellion in Awadh was a collective act of various social groups.

अथवा/or

विद्रोही नेताओं की घोषणाओं, सिपाहियों की कुछ अर्जियों तथा नेताओं के कुछ पत्रों से हमें विद्रोहियों की सोच के बारे में कुछ जानकारी मिलती है. जो इस प्रकार है-

(अ) वे अंग्रेजी सत्ता को उत्पीड़क निरंकुश और षड्यंत्रकारी मान रहे थे। इसलिए उन्होंने ब्रिटिश राज के विरुद्ध सभी भारतीय सामाजिक समूहों को एकजुट होने का आहवान किया। वे इस राज से सम्बन्धित प्रत्येक चीज को खारिज कर रहे थे।

(ब) विद्रोहियों के घोषणाओं से ऐसा लगता है कि वे भारत के सभी सामाजिक समूहों में एकता चाहते थे। विशेष तौर पर उन्होंने हिन्दू-मुस्लिम एकता पर जोर दिया। लाभ की दृष्टि से युद्ध को दोनों समुदायों के लिए एक-समान बताया। बहादुरशाह जफर की घोषणा में मुहम्मद और महावीर दोनों की दुहाई के साथ संघर्ष में भाग लेने की अपील की गई।

(स) वे वैकल्पिक सत्ता के रूप में अंग्रेजों का राज समाप्त करके 18वीं सदी से पहले की मुगलकालीन व्यवस्था की ओर ही वापिस लौटना चाहते थे।

विभिन्न सामाजिक समूहों की दृष्टि में अंतर- उपरोक्त बातों से यह अर्थ नहीं निकालना चाहिए कि सभी विद्रोहियों की सोच बिल्कुल एक जैसी थी। वास्तव में अलग-अलग सामाजिक समूहों की दृष्टि में अन्तर था, उदाहरण के लिए-

(i) सैनिक चाहते थे कि उन्हें पर्याप्त वेतन पदोन्नति तथा अन्य सुविधाएँ यूरोपीय सिपाहियों की तरह ही प्राप्त हो। वे अपने आत्मसम्मान व भावनाओं की भी रक्षा चाहते थे। वे अंग्रेजों के विदेशी सत्ता को खत्म करके अपने पुराने शासकों की सत्ता की पुनःस्थापना चाहते थे।

(ii) अपदस्थ शासक विद्रोह के नेता थे परन्तु इनमें से अधिकांश अपनी रजवाड़ा शाही को ही पुनः स्थापित करने के लिए लड़ रहे थे। इसलिए उन्होंने पुराने ढर्रे पर ही दरबार लगाए और दरबारी नियुक्तियाँ कीं।

(iii) ताल्लुकदार अथवा जमींदार अपनी जमींदारियों और सामाजिक हैसियत के लिए संघर्ष में कूदे थे। वे अपनी जमीनों को पुनः प्राप्त करना चाहते थे जो अंग्रेजों ने उनसे छीनकर किसानों को दे दी थी।

(iv) किसान अंग्रेजों की भू-राजस्व व्यवस्था से परेशान था। इसमें कोई लचीलापन नहीं था। राजस्व का निर्धारण बहुत ऊँची दर पर किया जाता था और उसकी वसूली 'इन्डे' के साथ की जाती थी। फसल खराब होने पर भी सरकार की ओर से कोई दया भाव नहीं था। इसी कारण वह साहूकारी के चंगुल में फँसता था। यही कारण था कि अंग्रेजी राज के साथ-साथ वह अन्य उत्पीड़कों को भी खत्म करना चाहता था। उदाहरण के लिए उन्होंने कई स्थानों पर सूदखोरों के बही खाते जला दिए और उनके घरों में तोड़-फोड़ की।

From the announcements of the rebel leaders, some applications of the soldiers and some letters of the leaders, we get some information about the thinking of the rebels, which is as follows -

(a) They considered the British government as oppressive, autocratic and conspiratorial. Therefore he called upon all Indian social groups to unite against the British Raj. They were rejecting everything related to this kingdom.

(b) From the declarations of the rebels it appears that they wanted unity among all the social groups of India. Especially he emphasized on Hindu-Muslim unity. From the point of view of benefits, the war was said to be equal for both the communities. Bahadurshah Zafar's proclamation appealed to both Muhammad and Mahavira to participate in the struggle.

(c) They wanted to end the British rule as an alternative power and return to the pre-18th century Mughal system.

Difference in the views of different social groups – It should not be interpreted from the above points that the thinking of all the rebels was

exactly the same. In fact, there were differences in the views of different social groups, for example-

(i) The soldiers wanted that they should get adequate salary, promotion and other facilities like the European soldiers. They also wanted to protect their self-respect and sentiments.

They wanted to eliminate foreign rule and re-establish the power of their old rulers. The deposed rulers were the leaders of the rebellion but most of them returned to their princely states

(ii)Were fighting to establish. Therefore, he held his court on the old lines and made court appointments.

(iii)Talukdars or landlords had jumped into the struggle for their land holdings and social status. They wanted to reclaim their lands which the British had snatched away from them and given them to the farmers. The farmer was troubled with the land revenue system of the British. There was no flexibility in it.

(iv)Revenue was determined at a very high rate and was collected with 'inde'. There was no mercy from the government even when the crop failed. Due to this he got trapped in the clutches of moneylenders. This was the reason That along with the British Raj, he also wanted to eliminate other oppressors. For example, he burnt the account books of moneylenders at many places and vandalized their houses.

प्रश्न34. 1. अजंता

2. हंपी

3. पाटलिपुत्र

4. जगन्नाथपुरी मंदिर

5. लोथल

Question 34.

1. Ajanta
2. Hampi
3. Pataliputra
4. Jagannathpuri Temple

5. Lothal